

ॐ जय जगदीश हरे आरती
ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे
भक्त जनों के संकट, दास जनों के संकट, क्षण में दूर करे
ॐ जय जगदीश हरे
जो ध्यावे फल पावे, दुख बनिसे मन का. स्वामी दुख बनिसे मन का
सुख सम्पत्ता घर आवे, सुख सम्पत्ता घर आवे, कष्ट मटि तन का
ॐ जय जगदीश हरे
मात पति तुम मेरे, शरण गहूं मैं कसिकी, स्वामी शरण गहूं मैं कसिकी
तुम बनि और न दूजा, तुम बनि और न दूजा, आस करूं मैं जसिकी
ॐ जय जगदीश हरे
तुम पूरण परमात्मा, तुम अंतरयामी, स्वामी तुम अंतरयामी
पारब्रह्म परमेश्वर, पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी
ॐ जय जगदीश हरे
तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्ता, स्वामी तुम पालनकर्ता
मैं मूरख खल कामी, मैं सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्ता
ॐ जय जगदीश हरे
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति, स्वामी सबके प्राणपति
कसि वधि मिलिं दयामय, कसि वधि मिलिं दयामय, तुमको मैं कुमति
ॐ जय जगदीश हरे
दीनबंधु दुखहरता, ठाकुर तुम मेरे, स्वामी ठाकुर तुम मेरे
अपने हाथ उठाओ, अपने शरण लगाओ, द्वार पड़ा तेरे
ॐ जय जगदीश हरे
वषिय वकार मटाओ, पाप हरो देवा, स्वामी पाप हरो देवा
श्रद्धा भक्ति बिढाओ, श्रद्धा भक्ति बिढाओ, संतन की सेवा
ॐ जय जगदीश हरे
ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे
भक्त जनों के संकट, दास जनों के संकट, क्षण में दूर करे
ॐ जय जगदीश हरे